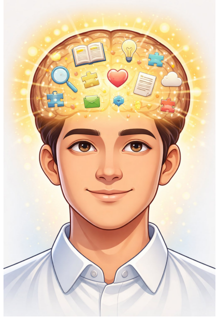

22-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - विशाल बुद्धि बन बड़ों-बड़ों की ओपीनियन ले अनेक आत्माओं का कल्याण करो, उनसे हॉल आदि लेकर खूब प्रदर्शनियां लगाओ"

प्रश्नः-अभी तुम्हें कौन सी स्मृति आई है जिसका सिमरण करो तो कभी दु:खी नहीं होंगे?

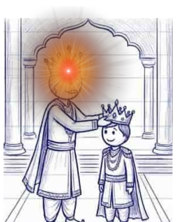

उत्तर:-अभी स्मृति आई कि हम पूज्य राव थे, फिर रंक बनें। अब फिर से बाबा हमें राव (राजा) बना रहे हैं। बाबा अभी हमें सारे विश्व का समाचार सुनाते हैं, हम वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी को जान गये हैं। इन्हीं स्मृतियों का सिमरण करते रहो तो Advantages कभी अपने को दु:खी नहीं समझेंगे। सदा खुश रहेंगे।

गीत:-नयन हीन को राह दिखाओ प्रभू.. Click

नैन हीन को राह दिखा प्रभू (२)
पग-पग ठोकर खाऊँ मैं
नैन हीन को राह दिखा प्रभू पग-पग ठोकर खाऊँ मैं
नैन हीन को

तुम्हरी नगरिया की कठिन डगरिया (२)
चलत चलत गिर जाऊँ मैं, प्रभू
नैन हीन को राह दिखा प्रभू पग-पग ठोकर खाऊँ मैं
नैन हीन को राह दिखा प्रभू

चहूँ ओर मेरे घोर अंधेरा भूल ना जाऊँ द्वार तेरा (२)
एक बार प्रभू हाथ पकड़ लो (३)
मन का दीप जलाऊँ मैं
प्रभू -
नैन हीन को राह दिखा प्रभू पग-पग ठोकर खाऊँ मैं
नैन हीन को

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

22-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

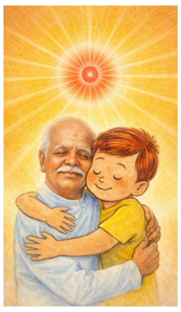
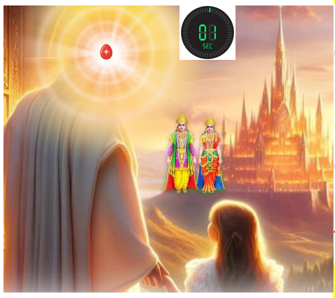

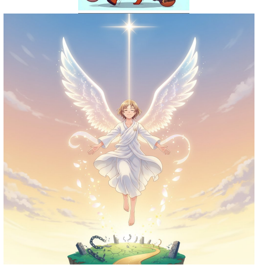
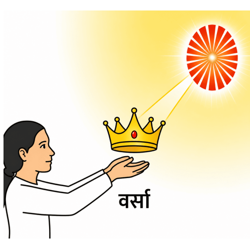

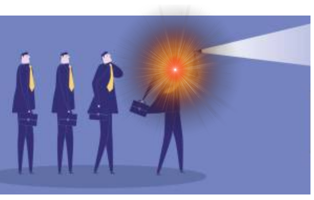

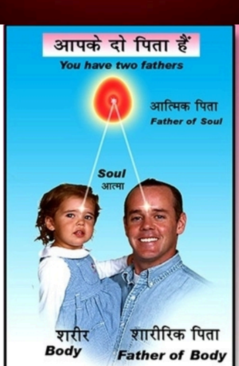

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे सिकीलधे रूहानी बच्चों ने गीत सुना। बच्चे समझते हैं कि बाप को मिलना वा बाप से वर्सा लेना बहुत सहज है। गाया भी जाता है बाप से एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है। जीवनमुक्ति माना सुख-शान्ति-सम्पत्ति आदि का वर्सा। अब जीवनमुक्ति और जीवनबन्ध दो अक्षर हैं। बच्चे जानते हैं इस समय भक्ति मार्ग और रावण राज्य के कारण सब जीवनबन्ध में हैं। बाप आकर बन्धन से मुक्त करते हैं, वर्सा देते हैं। जैसे बच्चा जन्मा और माँ-बाप, मित्र-सम्बन्धी आदि समझ जाते हैं वारिस पैदा हुआ। जैसे यह समझना सहज है वैसे वह भी सहज है, बच्चे कहते हैं बाबा कल्प पहले मिसल आप हमको आकर मिले हो। आप से ही सहज वर्सा पाने का रास्ता मिला है। यह तो हर एक जानते हैं नई सृष्टि का रचयिता भगवान ही है। वह हमको भटकने से बचाते हैं। कल भक्ति करते थे, आज बाप से सहज ज्ञान और राजयोग का रास्ता मिला है। बच्चे अपना अनुभव सुनाते हैं कि हमने बी.के. द्वारा सुना कि दो बाप हैं। यह सिवाए तुम्हारे और कोई

चढ़ाओ नशा...

22-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मुख से कह न सके कि दो बाप हैं। तुम्हारी हर एक बात वन्डरफुल है। अभी स्मृति में आता है जो यहाँ के होंगे उनको झट स्मृति में आ जायेगा। हाँ, स्मृति में आये हुए को भी माया कोई समय जोर से थप्पड़ लगाए विस्मृत कर देती है। इसमें बच्चों को बड़ा खबरदार रहना है। स्मृति तो बाप ने दिलाई है। पवित्रता का कंगन भी पूरा बांधना है।

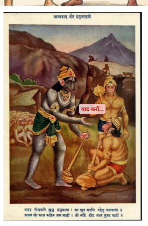

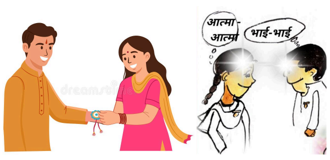

रक्षाबन्धन का रहस्य क्या है, सो तो अभी तुम जानते हो। किसने यह प्रतिज्ञा कराई है। काम तो महाशत्रु है। बाप कहते हैं - मेरे साथ प्रतिज्ञा करो कि कभी भी पतित नहीं बनूँगा और मुझे याद करते रहो तो आधाकल्प के पाप जलकर खत्म हो जायेंगे। बाप गैरन्टी करते हैं परन्तु यह तो बच्चे समझते भी हैं - बाप गैरन्टी करते यह तो बात ठीक है ना। सोनार गैरन्टी भी क्या करेंगे कि हम पुराने जेवर को नया बनायेंगे। उनका तो यह काम ही है। आग में डालने से जरूर वह सच्चा सोना बन ही जायेगा। तो बाप समझाते हैं - आत्मा में भी खाद पड़ी है। कैसे सतो रजो तमो में आते हैं - यह बहुत सहज है। चित्र भी इसलिए बनाये हैं कि इस

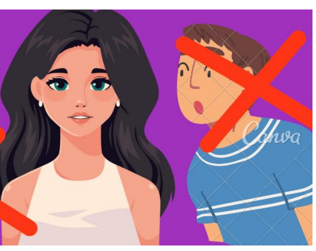

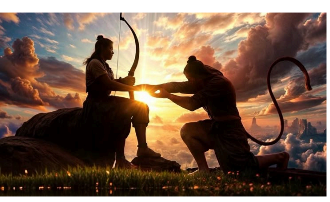

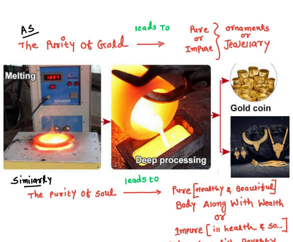

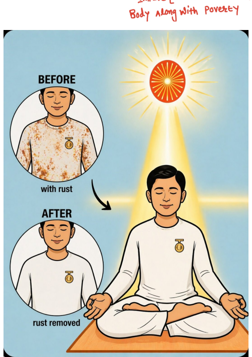

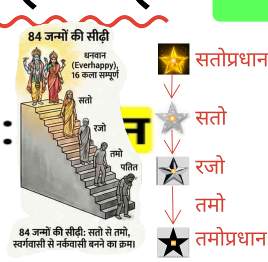

Points: न ग धारणा सेवा M.imp.

पर सहज समझा सकें। युनिवर्सिटी कॉलेजेस आदि में भी नक्शे होते हैं ना - अनेक प्रकार के। तुम्हारे भी यह नक्शे हैं। तुम अच्छी रीति किसको समझा सकते हो। ज्ञान सागर पतित-पावन बाप ही आकर यह रास्ता बताते हैं। और कोई पतित को पावन बना न सकें। नयन हीन दु:खी मनुष्य हैं। तुम बच्चे जानते हो पहले दो युगों में दु:ख होता नहीं। न भक्ति होती है। वह है ही स्वर्ग। भारत के इस समय के मनुष्यों का और भारत के प्राचीन मनुष्यों का कान्ट्रास्ट है ना। परन्तु यह और कोई समझते नहीं। कितनी पूजा चलती है। जितना-जितना जो साहूकार होते हैं उतना देवी-देवताओं को अच्छे जेवर पहनाते हैं। बाबा खुद अनुभवी है। बाम्बे में लक्ष्मी-नारायण का जो मन्दिर है, उनके ट्रस्टी ने लक्ष्मी-नारायण के लिए हीरों का हार बनवाया था। बाबा को उस ट्रस्टी का नाम भी याद है। पहले शिवबाबा का मन्दिर बनाया तो उनको बहुत सजाया फिर देवताओं का बनाया तो लक्ष्मी-नारायण आदि को भी कितने जेवर पहनाये। उस समय कितना धन होगा। मुहम्मद गजनवी कितने

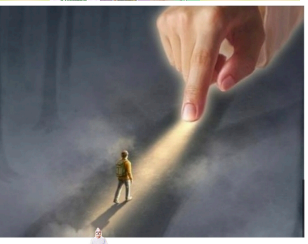
Exclusive Authority of Shiv baba

Experience of Sweet Brahma baba
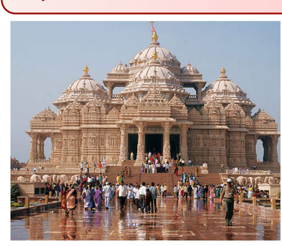

22-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ऊंट भरकर ले गये। भारत में कितना अथाह धन था। अभी तुम यथार्थ रीति समझते हो। हमारा भारत क्या था! हमारे भारत में कुबेर का खजाना था। हीरे-जवाहरों के मन्दिर बनाते थे। अभी वह चीजें हैं नहीं, सब लूटकर ले गये। अभी तो क्या हाल हुआ है।

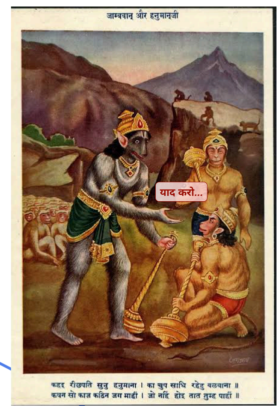

समझा?

तुम ही पूज्य राव थे फिर तुम ही 84 जन्म ले पूरे रंक बने हो। ऐसी-ऐसी बातें घड़ी-घड़ी सिमरण करनी चाहिए। तो फिर (Result) कभी भी तुम अपने को दु:खी नहीं समझेंगे। दिल में सिमरण करते रहेंगे हम बाबा से क्या ले रहे हैं। बाप आकर हमको सारे विश्व का समाचार सुनाते हैं। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कोई भी जानते नहीं। (But we know, How Lucky & Great we are..!) तुम जानते हो पहले एक धर्म, एक राज्य, एक ही मत, एक भाषा थी। सभी सुखी थे। पीछे यह आपस में लड़ने-झगड़ने लगे और भारत टुकड़ा-टुकड़ा होने लगा। पहले ऐसे नहीं था। वहाँ कोई भी किसम का दु:ख

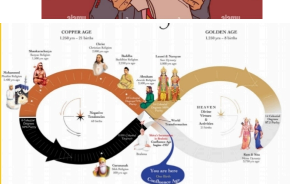
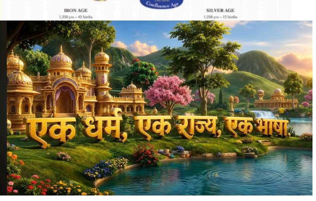

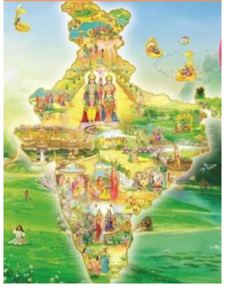

नहीं था। बीमारी का नाम निशान नहीं था। उसका नाम ही है स्वर्ग। तुमको अपनी स्मृति आई है। बरोबर कल्प-कल्प हमको विस्मृति होती है फिर स्मृति में आता है। पहली एकज़ भूल हुई है जो रचता और रचना को भूल गये। अभी तुम आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। सतयुग में भी यह नॉलेज नहीं होगी, तो फिर परम्परा कैसे चल सकती। उस समय मुख्य तो राजे लोग ही होते हैं। ऋषि-मुनि थोड़ेही होते हैं। वे द्वापर से आते हैं। ऋषि-मुनि आदि को खान-पान भी राजाओं से ही मिलता है। राजायें सम्भाल करते हैं क्योंकि फिर भी संन्यास करते हैं ना। प्राचीन भारत का प्राचीन राजयोग गाया जाता है। प्राचीन ऋषि-मुनि नहीं कहेंगे। वह तो द्वापर में ही आते हैं। वह राजाओं के आधार पर चलते हैं। कहते हैं हम रचता और रचना को नहीं जानते। बाप कहते हैं - यह खुद राजायें भी नहीं जानते। इस दुनिया में कोई भी इस नॉलेज को नहीं जानते। अभी तुम बच्चे समझदार बने हो। लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर जो बनाते हैं उनको तुम लिख सकते हो। इतने लाखों रूपये

Most imp

सतयुग + त्रेता

Words of world Almighty Authority

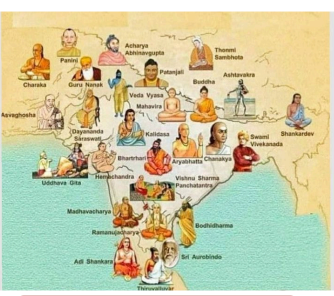

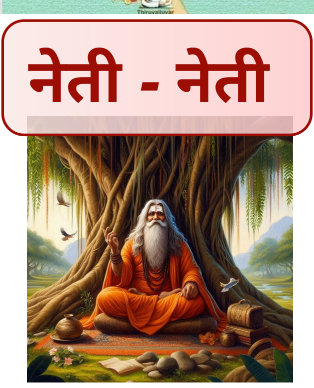

खर्च कर मन्दिर बनाया है परन्तु उनकी जीवन कहानी का आपको पता है? इन्होंने राज्य कैसे पाया फिर कहाँ चले गये। अभी कहाँ हैं, हम आपको सब राज़ बता सकते हैं। ऐसा उन्हों को लिख सकते हो। तुम बच्चे तो हर एक की जीवन कहानी को जान चुके हो तो क्यों नहीं लिखना चाहिए। हमको टाइम दो तो हम एक-एक की जीवन कहानी बतायेंगे। शिव के मन्दिर जो बनाते हैं उनको भी तुम लिख सकते हो। बनारस में शिव का मन्दिर कितना बड़ा है। वहाँ भी ट्रस्टी लोग होंगे। कोशिश करनी चाहिए - बड़ों-बड़ों को समझायें। बड़े आदमी समझ गये तो उनका आवाज़ बहुत होता है। गरीब लोग झट सुन लेते हैं। मदद बड़ों की लेनी है। ओपीनियन भी बड़ों-बड़ों की लिखवानी है क्योंकि उन्हों का आवाज भी मदद करता है। वास्तव में वह इतना आवाज़ करते नहीं हैं जितना होना चाहिए। तुम प्रेजीडेंट को भी समझाते हो। अच्छा-अच्छा भी कहते हैं। चीफ मिनिस्टर, गवर्नर आदि ओपनिंग करते हैं - लिखते हैं यह बी.के. तो बहुत अच्छा सहज रास्ता ईश्वर से

Strategy of सेवा To reach

मिलने का बताते है। परन्तु ईश्वर क्या चीज़ है, यह कुछ भी नहीं समझते। सिर्फ उस समय कहते हैं रास्ता बड़ा अच्छा है। शान्ति मिलने का मार्ग अच्छा है। परन्तु खुद नहीं समझते हैं।

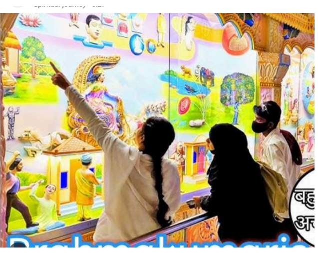

Direction of The Almighty

बाबा बड़ों-बड़ों को समझाने के लिए भी कहते हैं। बड़े-बड़े मनुष्यों से बड़े-बड़े जो नामीग्रामी हॉल हैं वह ले लो। बोलो, हम सब मनुष्यों के कल्याण लिए यह प्रदर्शनी हमेशा के लिए रखना चाहते हैं, सिर्फ एडवरटाइज करनी है। ऐसे 50 या 100 हॉल लेने चाहिए। भारत तो बहुत बड़ा है ना। एक-एक शहर में 10-12 हॉल लो। अखबार में पड़ जाए इतने हॉलों में प्रदर्शनी हो रही है। जिनको समझना है वह आकर समझें। तो कितने का कल्याण हो जायेगा। बच्चों को बड़ा विशाल बुद्धि बनना चाहिए। सर्विस बच्चों को करनी चाहिए ना। बाप सब बच्चों को कहते हैं प्रदर्शनियाँ बहुत जोर-शोर से करो। बाबा तैयारी करा रहे हैं। बच्चों को

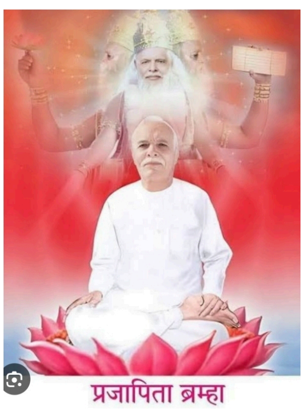

कोशिश करनी चाहिए, यह सब समझने की बातें हैं। भगवान आते हैं प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा रचना रचते हैं प्रजा की। तो जरूर कितने ब्राह्मण रचे होंगे। अब फिर रच रहे हैं। कितने ब्राह्मण-ब्राह्मणियाँ हैं। बाबा यह ब्राह्मण धर्म रचते हैं संगम पर। तुम प्रैक्टिकल में देख रहे हो और समझ रहे हो। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। तुम बच्चे समझते हो बाबा आते ही तब हैं जब पतित दुनिया को पावन बनना होता है। यह भी जानते हैं परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ही रचना रचते हैं। परन्तु कब रचते हैं - यह नहीं समझते। वह समझते हैं कोई नई रचना रचते होंगे। ब्रह्मा को तो सूक्ष्मवतन में समझते हैं। अभी तुम समझते हो प्रजापिता ब्रह्मा तो यहाँ है। तुम सूक्ष्मवतन में जाते हो। पवित्र बन फिर फरिश्ते बन जाते हो, साक्षात्कार करते हैं। बच्चे आकर सुनाते हैं वहाँ मूवी चलती है। वह है ही मूवी वर्ल्ड, तुमने मूवी बाइसकोप भी देखा था। अभी प्रैक्टिकल सब बातों को तुम जान चुके हो। मूलवतन है साइलेन्स वर्ल्ड, वहाँ आत्मायें रहती हैं। सूक्ष्मवतन में सूक्ष्म

वाह रे मैं...

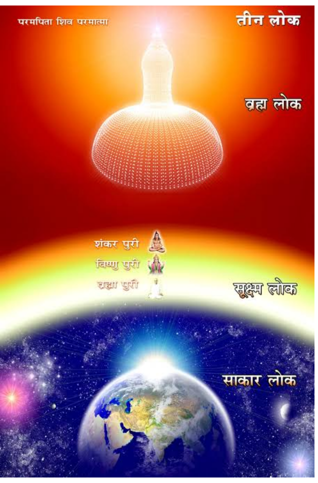

शरीर भी है। तो जरूर कुछ भाषा भी होगी। तुम बच्चों की बुद्धि में है हम आत्माओं का स्थान शान्तिधाम है फिर है सूक्ष्मवतन। वहाँ ब्रह्मा-विष्णु-शंकर रहते हैं। और यह है कलियुग और सतयुग का संगम। यहाँ बाप आते हैं, यहाँ से तुम ब्राह्मण जाते हो। पियरघर और ससुरघर है ना। यहाँ दोनों तुम्हारे पियर हैं। बापदादा दोनों मेहनत करते हैं बच्चों को गुल-गुल (फूल) बनाने। मुसलमान भी कहते हैं गार्डन ऑफ अल्लाह। कराची में एक पठान था - वह सामने खड़ा होता था। देखते-देखते गिर पड़ता था। पूछा जाता था तो कहता था हम खुदा के बगीचे में गया, खुदा ने फूल दिया। अब उनको ज्ञान तो था नहीं। अभी तुम समझते हो बगीचा किसको कहा जाता है। यह है कांटों का जंगल और वह है फूलों का बगीचा। तुम्हारी बुद्धि में सारा राज़ है। सतयुग क्या है, कलियुग क्या है। तुमको बहुत खुशी होनी चाहिए। सारा चक्र तुम्हारी बुद्धि में है। विस्तार तो इनका बहुत है। तुम्हारी बुद्धि में कितना शॉर्ट में बैठा हुआ है।

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

किन शब्दों में आपका धन्यवाद करे...
दिन रात की ये सेवा हम याद करे..

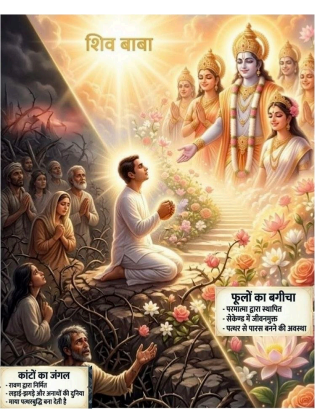

22-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति

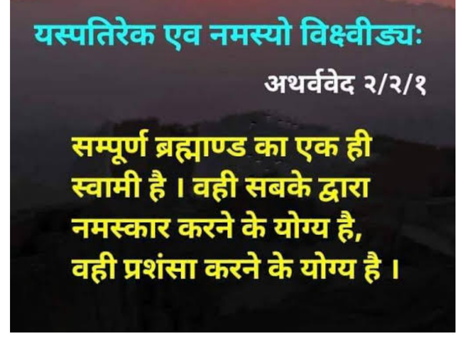

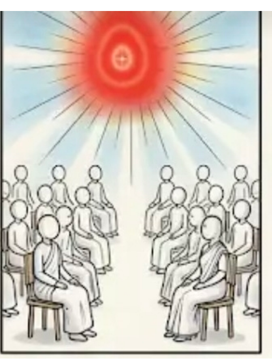

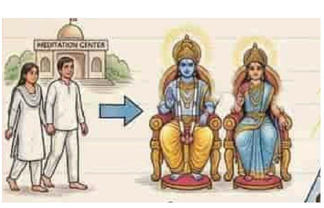

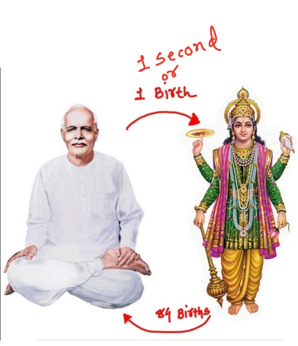

तुम बच्चों ने रचता बाप द्वारा रचता और रचना को जाना है। ब्रह्मा को रचता नहीं कहेंगे। रचता एक है - बलिहारी भी एक की है। पहले-पहले रचना ब्रह्मा की है फिर कहेंगे श्रीकृष्ण की। ब्रह्मा तो है, ब्राह्मण भी जरूर चाहिए। पाण्डवों को ब्राह्मण नहीं समझेंगे। ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण चाहिए। यह है रूहानी यज्ञ, इसको स्प्रीचुअल नॉलेज कहा जाता है। रूह को वही बाप ज्ञान देंगे। तुम जानते हो हमको मनुष्य नहीं पढ़ाते हैं। सभी आत्माओं को बाप पढ़ाते हैं। कहते भी हैं ब्रह्मा द्वारा स्थापना। श्रीकृष्ण के लिए थोड़ेही कहेंगे, वह तो हो भी न सके। ब्रह्मा द्वारा स्थापना कौन कराते हैं? क्या श्रीकृष्ण? नहीं, परमपिता परमात्मा। विष्णु द्वारा पालना। ब्रह्मा और विष्णु का कितना पार्ट है। ब्रह्मा मुख वंशावली ही फिर जाकर विष्णुपुरी के देवता बनते हैं। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा। यह भी बच्चों को समझाया है। ब्रह्मा सो विष्णु बनने में एक सेकेण्ड, विष्णु सो ब्रह्मा बनने में 84 जन्म। कितनी वन्डरफुल बातें हैं। कोई भी समझ न सके।

ये तो पक्का कर लो..

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...!

In between other 82 births of that Soul comprises Umbilical cord of vishnu Represents that the vishnu himself becomes brahma After 84 births.

ब्रह्मा सो विष्णु
विष्णु सो ब्रह्मा

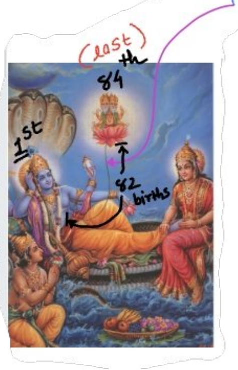

यह है बेहद की बातें। बेहद के बाप से बेहद की पढ़ाई पढ़ बेहद का राज्य लेना है। सृष्टि चक्र को जानना है। आत्मा ही जानती है शरीर द्वारा। ऐसे नहीं कि शरीर नॉलेज लेता है आत्मा द्वारा। नहीं, आत्मा नॉलेज लेती है। तुमको कितनी खुशी है। यह आन्तरिक गुप्त खुशी होनी चाहिए। पढ़ाई के संस्कार आत्मा में हैं। दु:ख भी आत्मा को होता है। कहते हैं हमारी आत्मा को दु:खी मत करो। बच्चों को अब कितनी रोशनी मिल रही है। तुमको खुशी रहती है। सागर से रिफ्रेश हो बादलों को मिलकर वर्षा बरसानी है। आपस में मिलकर प्रदर्शनी आदि तैयार करने में मदद करो। शौक होना चाहिए। सर्विस, सर्विस और सर्विस। अच्छा!

Mind very well...

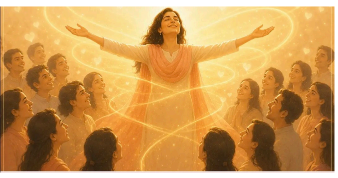

m.m.m....imp.

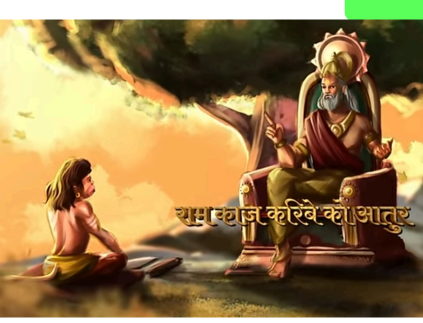

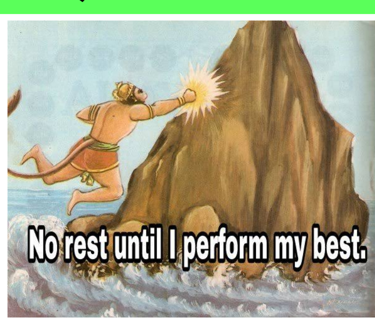

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

Points: ज्ञान योग धारणा से

22-08-2026 प्रात:मुरली ओम् श

धारणा के लिए मुख्य सार:-

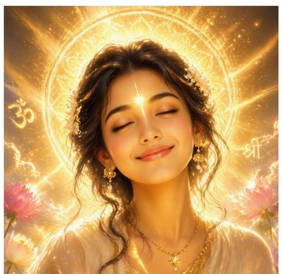

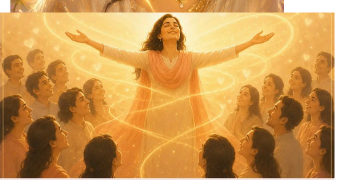

1) बाप द्वारा मिली हुई नॉलेज का सिमरण कर अपार खुशी में रहना है। विशाल बुद्धि बन जोर-शोर से सर्विस करनी है।

2) बाप द्वारा जो स्मृति मिली है उसे विस्मृति में नहीं लाना है। पवित्र रहने की जो बाप से प्रतिज्ञा की है उसे पूरा निभाना है।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Method/Process/Instrument

22-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- न्यारे पन के अभ्यास द्वारा फरिश्ते रूप का साक्षात्कार कराने वाले निरन्तर सहजयोगी भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

जैसे कोई भी वस्त्र धारण करना वा न करना अपने हाथ में होता है, ऐसा अनुभव इस शरीर रूपी वस्त्र में हो।

जैसे वस्त्र को धारण करके कार्य किया और कार्य पूरा होते ही वस्त्र से न्यारे हुए। शरीर और आत्मा दोनों का न्यारापन चलते-फिरते अनुभव हो - तब कहेंगे निरन्तर सहजयोगी।

ऐसे डिटैच रहने वाले बच्चों द्वारा अनेक आत्माओं को फरिश्ते रूप और भविष्य राज्य पद के साक्षात्कार होंगे।

अन्त में इस सर्विस से ही प्रभाव निकलेगा।

ये पक्का समझ लो..

So, Do it Now

स्लोगन:-संगम का एक सेकण्ड भी व्यर्थ गंवाना अर्थात् एक वर्ष गंवाना।

M.imp.

ये अव्यक्त इशारे -

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

ब्राह्मण जीवन का जो आन्तरिक वर्सा सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप, मन की सन्तुष्टता है, उसका अनुभव करने के लिए मन्सा की पवित्रता चाहिए।

जमा करने की विधि है - मन्सा-वाचा-कर्मणा पवित्रता। फाउन्डेशन पवित्रता है।

सेवा में सफलता का आधार भी पवित्रता है।

संकल्प वा बोल में और कोई भी भाव मिक्स नहीं हो। भाव में भी पवित्रता, भावना में भी पवित्रता हो।

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans July 26 → Click

All अव्यक्त इशारे July 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

ज्ञान मार्ग

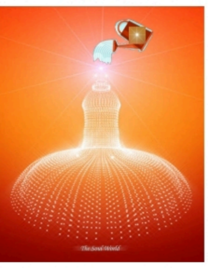

भक्तिमार्ग

11.7 मास्टर बीजरूप बन, वृत्ति और वायुमण्डल को परिवर्तन करने की सेवा करो :

अमृतवेले से लेकर सहयोगी बनो। सारे दिन की दिनचर्या का मूल लक्ष्य यही एक शब्द रखो — सहयोग देना है, सहयोगी बनना है। अमृतवेले बाप से मिलन मना कर बाप समान **मास्टर बीजरूप बन, मास्टर विश्व-कल्याणकारी बन, सर्व आत्माओं को अपनी प्राप्त हुई शक्तियों के द्वारा, आत्माओं की वृत्ति और वायुमण्डल परिवर्तन करने के लिए सहयोगी बनो।** बीज द्वारा सारे वृक्ष को रूहानी जल देने के सहयोगी बनो, जिससे सर्व आत्माओं रूपी पत्तों को प्राप्ति का पानी मिलने का अनुभव हो। ऐसे **अमृतवेले से लेकर जो भी सारे दिन में कार्य करते हो** **हर कार्य का लक्ष्य — ''सहयोग देना'' हो।**

हम बच्चों का प्रश्न: मीठे बाबा, हम बंधनों से कैसे छूटे?

Answer by The World Almighty Authority:

जितना-जितना अपने को सर्विस के बन्धन में बांधते जायेंगे _तो दूसरे बन्धन छूटते जायेंगे_ ।

आप ऐसे नहीं सोचो कि यह बन्धन छूटे तो सर्विस में लग जाएँ।

ऐसे नहीं होगा। (ये पक्का समझ लो)

सर्विस करते रहो। *बन्धन होते हुए भी अपने को सर्विस के बन्धन में जोड़ते जाओ।*

यह जोड़ना ही तोडना है।
तोड़ने के बाद जोड़ना नहीं होता है।
जितना जोड़ेंगे उतना ही टूटेगा।

जितना अपने को सर्विस में सहयोगी बनायेंगे उतना ही प्रजा आपकी सहयोगी बनेगी।

कोई भी कारण है तो उनको हल्का छोड़कर *पहले सर्विस के मौके को आगे रखो।*
कर्तव्य को पहले रखना होता है। कारण होते रहेंगे।
लेकिन कर्तव्य के बल से ढीले पड़ जायेंगे।

AV: 7/6/70

ये तो पक्का समझ लो कि ...
माया हमें कभी भी एक्स्ट्रा टाइम निकालने नहीं देगी बाबा की याद या सेवा के लिए - जिसके द्वारा आत्मा शक्तिशाली बने। (माया का सबसे पहला कर्त्तव्य है - आत्मा की ऊर्जा को क्षीण करना और आत्मा को ऊर्जा प्राप्त करने से रोकना।)
वो हमें सदैव उलजाकर रखने का प्रयास करेगी।

अब ये हम पर निर्भर है कि हमे माया के बंधनों से छूटना है (अपने को सेवा में लगाकर) या फिर दुनिया और माया के बंधनों में और ही उलझना है।

Choice is All Yours (And accordingly be prepared for its consequences)

दिल के सच्चे भाव से, अपनी क्षमता के अनुरूप की गई
छोटी सी सेवा भी हमारे भाग्य को उजागर कर देती है।